आचार्य सोमदेवसूरि

जीवन-परिचय : आचार्य सोमदेवसूरि महान तार्किक, सरस साहित्यकार, कुशल राजनीतिज्ञ, प्रबुद्ध तत्त्वचिन्तक और उच्चकोटि के धर्माचार्य थे। ये नेमिदेव के शिष्य, यशोदेव के प्रशिष्य और महेन्द्रदेव के अनुज थे।

सोमदेव का संस्कृत भाषा पर विशेष अधिकार था। न्याय, व्याकरण, काव्य, छन्द, धर्म, आचार और राजनीति के वे प्रकाण्ड पंडित थे। महाकवि धर्मशास्त्रज्ञ और प्रसिद्ध दार्शनिक थे। सोमदेव की ख्याति उनके गद्य-पद्यात्मक काव्य यशस्तिलक और राजनीति की पुस्तक नीतिवाक्यामृत से है। उनके द्वारा रचित ग्रन्थ ही उनके वैदुष्य के परिचय के लिए पर्याप्त हैं। जैन सिद्धान्तों के अधिकारी विद्वान होते हुए भी वे दर्शनों में दक्ष समालोचक हैं।

उनके लिए विशेष उपाधियाँ दी गयी हैं, जैसे-स्याद्वादाचल सिंह, तार्किक चक्रवर्ती, वादीभ पंचानन, वाक्कल्लोलपयोनिधि, कविकुलराजकुंजर अनवद्यगद्यपद्यविद्याधरचक्रवर्ती। ये विशेष उपाधियाँ उनकी उत्कृष्ट प्रज्ञा और प्रभावकारी व्यक्तित्त्व के परिचायक हैं।

सोमदेवसूरि का समय यशस्तिलक में शक संवत् 881 (ई. सन् 949) दिया है। अत: सोमदेव ई. सन् 959 अर्थात् दशम शती के आचार्य हैं।

रचना-परिचय : आचार्य सोमदेवसूरि की तीन रचनाएँ उपलब्ध हैं—

1. **नीतिवाक्यामृत :** नीतिवाक्यामृत राजनीति का कौटिल्य के अर्थशास्त्र की तरह उत्कृष्ट ग्रन्थ है। इसमें राजा, मंत्री, कोषाध्यक्ष और शासन-संचालन के मौलिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। नीतिवाक्यामृत मूलरूप से बम्बई से सन् 1891 में प्रकाशित हुआ था। सन् 1922 में माणिकचन्द्र ग्रन्थमाला बम्बई से संस्कृत टीका सहित प्रकाशित हुआ। सन् 1950 में पण्डित सुन्दरलाल शास्त्री ने हिन्दी अनुवाद के साथ इसका प्रकाशन किया। नीतिवाक्यामृत पर दो टीकाएँ हैं।

यह ग्रन्थ संस्कृत साहित्य का अनुपम रत्न है।

2. **यशस्तिलक चम्पू :** आचार्य सोमदेव का दूसरा ग्रन्थ यशस्तिलक चम्पू है। इसकी कथावस्तु में महाराज यशोधर का चरित है, जो आठ अध्यायों में विभक्त है। यशस्तिलक की यह कथा अत्यन्त लोकप्रिय रही है। संस्कृत और अपभ्रंश के अनेक कवियों ने इस कथा को ग्रहण भी किया है। यही कारण है कि संस्कृत और अपभ्रंश भाषा में अनेक यशोधर काव्य लिखे गये हैं।

3. **अध्यात्मतरंगिणी :** इस ग्रन्थ का दूसरा नाम 'योगमार्ग' भी है। यह अध्यात्म विषयक रचना है। इसमें 40 पद्य हैं। यह ग्रन्थ स्तोत्रशैली में लिखा गया है। ध्यान का भी वर्णन इसमें संक्षेप में मिलता है। रचना हृदय को छूने वाली और उपदेशप्रद है।

इनके अतिरिक्त, युक्तिचिन्तामणिस्तव, त्रिवर्ग महेन्द्रमातलिसंजल्प, षण्णवतिप्रकरण और स्याद्वादोपनिषद की भी रचना की है, जो अभी उपलब्ध नहीं है।